काली जी की आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड तेरे द्वार खडे
पान सुपारी धवजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट करें ।

सुन जग्दम्बे कर न विलम्बे, सन्तन के भंडार भरे
सन्तान प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

बुद्धि विधाता तू जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे ।

जब जब पीर पडे भक्तन पर, तब तब आए सहाय करे
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

बार बार तै सब जग मोह्यो, तरुणी रुप अनूप धर
माता होकर पुत्र खिलावें, कही भार्या बन भोग करे ।

संतन सुखदायी, सदा सहाई, संत खडे जयकार करें
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

ब्रह्मा, विष्णू, महेश फल लिए भेंट देन सब द्वार खड़े
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे ।

वार शनिचर कुंकुमवरणी, जब लुंकुड पर हुक्म करे
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

खड्ग खप्पर त्रिशुल हाथ लिये, रक्तबीज कुं भस्म करे
शुम्भ-निशुम्भ क्षणहिं में मारे, महिषासुर को पकड धरे ।

आदित वारी आदि भवानी, जन अपने को कष्ट हरे
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड-मुण्ड सब चुर करे
जब तूम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर टरे ।

सौम्य स्वभाव धरयो मेरी माता, जन की अर्ज कबूल करे
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

सात बार महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे
सिंह पीठ पर चढी भवानी, अटल भुवन में राज करे ।

दर्शन पावें मंगल गावें, सिध्द तेरी भेंट धरें
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

ब्रह्मा वेद पढ़ तेरे द्वारे, शिवशंकर हरि ध्यान धरे
इंद्र-कृष्ण तेरी करे आरती, चंवर कुबेर डुलाय रहे ।

जय जननी जय मातुभवानी, अचल भुवन में राज करे
संतन प्रतिपाली सदा ख़ुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥

Source : www.pallukot.com